- प्रकाशकीय निवेदन -

< षट्खण्डागम धवला सिध्दान्त ग्रंथके चतुर्थ खण्डके द्वितीय भागमें वेदनानुयोग नामक महाधिकारमें प्रथम चार अनुयोग अधिकारोंका वर्णन प्रस्तुत १० वें पुस्तकमें किया गया है । >

< इस ग्रंथका पूर्व प्रकाशन श्रीमंत सेठ सिताबराय लक्ष्मीचंद्र जैन साहित्योद्धार फंड विदिशा द्वारा हुआ है । उसका मूल ताडपत्र ग्रंथसे मिलानकर संशोधित पाठसहित द्वितीयावृत्तिका प्रकाशन अधिकार प्राप्त जीवराज जैन ग्रंथमाला सोलापुर द्वारा प्रकाशित करनेमें हम अपना सौभाग्य समझते हैं । >

< इस ग्रंथराजके मूल संपादक स्व.पं. फूलचंद्रजी सिध्दान्त शास्त्री इनका वृध्दपकालके कारण स्वर्गवास होनेसे इस ग्रंथका प्रकाशन करते समय उनकी पावन स्मृतिको श्रध्दांजलि अर्पणकर दु:ख समवेदना प्रकट करते हैं। >

< स्व. ब्र. रतनचंदजी मुख्त्यार (सहारनपुर) तथा आदरणीय पू. आर्यिका विशुध्दमती माताजी इनके संपर्कमें धवला ग्रंथोंका सूक्ष्म, गहन स्वाध्याय जिनका होता रहा ऐसे श्रीमान् पं. जवाहरलालजी सिध्दान्त शास्त्री (भिंडर) इनके तथा उनकी सुविद्य धर्मपत्नी श्रीमती कैलास जैन (भिंडर) द्वारा भेजे हुए संशोधनका भी इस संशोधनकार्यमें हमें सहयोग मिला जिसके लिए हम सभी सज्जनोंके अतीव अभारी हैं । प्रस्तुत पुस्तकमें पूर्व मुद्रित पाठ और संशोधित पाठ अलगसे संलग्न किया गया है । >

< इस ग्रंथका प्रुफ संशोधन कार्य जीवराज जैन ग्रंथमालाके संपादक श्री. नरेंद्रकुमार भिसीकर शास्त्री तथा धन्यकुमार जैनी द्वारा संपन्न हुआ है । तथा मुद्रणकार्य कल्याण प्रेस, सोलापुर और श्राविका मुद्रणालय, सोलापुर इनके द्वारा संपन्न हुआ है । हम इनके भी आभार प्रदर्शित करते हैं । >

< धर्मानुरागी श्रीमान् डॉ. अप्पासाहेब कलगोंडा नाडगौडा पाटील तथा उनकी धर्मपत्नी डॉ. सौ त्रिशलादेवी नाडगौडा पाटील इन महानुभावोंने षट्खण्डागम धवला भा. १० से १६ तकके पुनर्मुद्रण के लिए आर्थिक सहयोग देकर जिनवाणीकी सेवाका महान आदर्श उपस्थित किया ।

इसलिए उनका हार्दिक अभिनंदन करते हुए हम उनके सहयोग के लिए अनेकशः धन्यवाद प्रकट करते हैं । >

-रतनचंद सखाराम शहा-

< मंत्री >